जीवन में सबसे ज्यादा आसान और कठिन क्या है? 'गलती'।
– अज्ञात

तमाम कयास गलत साबित हुए

बड़ी बात यह कि यह सम्मान जर्मन, फ्रेंच, स्पैनिश, इटैलियन या रूसी के बजाय एक एशियाई जुबान के खाते में आया है। इसे कुल चार अवॉर्ड– बेस्ट फिल्म, बेस्ट ओरिजनल स्क्रीनप्ले, बेस्ट डायरेक्टर और बेस्ट इंटरनेशनल फीचर कैटिगरी में मिले हैं।

दीप मटपाल।

इस बार ऑस्कर अवॉर्ड को लेकर तमाम कयास गलत साबित हुए। दुनिया को चौंकाते हुए दक्षिण कोरियाई फिल्म 'पैरासाइट' ने बेस्ट पिक्चर का ऑस्कर अवॉर्ड जीत लिया। ऑस्कर जीतने वाली यह पहली गैर–अंग्रेजी फिल्म है। बड़ी बात यह कि यह सम्मान जर्मन, फ्रेंच, स्पैनिश, इटैलियन या रूसी के बजाय एक एशियाई जुबान के खाते में आया है। इसे कुल चार अवॉर्ड– बेस्ट फिल्म, बेस्ट ओरिजनल स्क्रीनप्ले, बेस्ट डायरेक्टर और बेस्ट इंटरनेशनल फीचर कैटिगरी में मिले हैं।

बेस्ट ऐक्टर का अवॉर्ड 'जोकर' के लिए वॉकिन फीनिक्स को और बेस्ट ऐक्ट्रेस का तमगा फिल्म 'जूडी' के लिए रिनी जैलवेगर को मिला। कॉफी हाउस में बैठकर लिखने वाले 'पैरासाइट' के डॉयरेक्टर बॉन्ग जून हो ने 25 साल के करियर में अब तक सिर्फ 7 फीचर फिल्मों का निर्देशन किया है। उन्हें 2003 में अपनी दूसरी फिल्म 'मेमोरीज ऑफ मर्डर' से जबर्दस्त ख्याति मिली।

यह कोरियाई इतिहास में हुए सीरियल मर्डर्स के सबसे पहले मामले पर आधारित थी। पैरासाइट में उन्होंने पूंजीवादी व्यवस्था की विसंगतियों पर करारा प्रहार किया है। फिल्म के केंद्र में है– किम फैमिली। पिता किम की–तेक एक खुशमिजाज और फक्कड़ आदमी है। उसकी पत्नी चंग सुक दिन भर काम में लगी रहने वाली वर्कोहॉलिक है। बेटी की–जुंग स्मार्ट और आर्टिस्टिक है और बेटा की–वू भी टैलेंटेड है। लेकिन सब के सब बेरोजगार हैं, पार्ट टाइम काम–धंधे करते हैं। गजब यह कि एक संयोग का फायदा उठाकर इस परिवार के सारे सदस्य एक अमीर परिवार के घर में पहचान बदल कर रहने लगते हैं और उसके साधनों से अपना जीवनयापन करते हैं। एक दिन उनका सामना उसी घर में रहने वाले अपने ही जैसे एक और परिवार से होता है। पैरासाइट का मतलब है परजीवी। फिल्म के ये पात्र कहने को पैरासाइट हैं लेकिन असल में ये अमीरों से कहीं ज्यादा योग्य हैं। बस, जिस व्यवस्था में वे रहते हैं, वह उन्हें अवसर नहीं दे रही। जाहिर है, यह सच सिर्फ साउथ कोरिया का नहीं, पूरी दुनिया का है।

फिल्म 2019–20 के अवॉर्ड सीजन की यह सबसे पॉपुलर आर्टहाउस फिल्म रही है लेकिन कमर्शल सिनेमाघरों में भी इसे अच्छी सफलता मिली है। फ्रांस के नामी कान फिल्म फेस्टिवल–2019 में इसने सबसे बड़ा अवॉर्ड 'पाम द ओर' जीता, उस साल जब कोरियाई सिनेमा अपनी 100वीं जयंती मना रहा था। भारतीय रुपये के हिसाब से इसका बजट करीब 80 करोड़ का था, जबकि लगभग 1180 करोड़ रुपये का बिजनेस यह पूरी दुनिया में कर चुकी है। इसे मिला ऑस्कर एक तरह से कोरियाई मनोरंजन जगत पर सबसे ऊंची मोहर भी है।

कोरियाई सीरियलों ने बहुत कम समय में अंतरराष्ट्रीय लोकप्रियता हासिल की है। वहां की सरकार भी अपनी फिल्मों, सीरियलों और पॉप म्यूजिक को बढ़ावा देने के लिए कुछ–कुछ करती रहती है। जैसे, दक्षिण कोरिया के सभी सिनेमाघरों के लिए साल में कम से कम 73 दिन कोरियाई फिल्में दिखाना अनिवार्य है। भारत की एंटरटेनमेंट इंडस्ट्री अपनी पहुंच का दायरा बढ़ाने के लिए कुछ गुर सियोल से भी सीख सकती है।

अद्भुत शक्ति

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा।

मनुष्य का मन यह सब समझने में सक्षम है। जो विशालता हमें बाहर दिखाई देती है वह हमारे अंदर भी उसी तरह है। भगवत गीता के ग्यारहवें अध्याय में पूर्ण ब्रह्मांड को धारण और उसकी क्षमता को समझने का उल्लेख किया गया हैं जहां कृष्ण अर्जुन का अपने विश्व रूप या सार्वभौमिक रूप से परिचय करवाते हैं, वह उनके इस रूप को देखकर स्तब्ध खड़े रह जाते हैं। हमारी समझ सीमित होती है लेकिन अनुभव से परे जाने की क्षमता हम में मौजूद होती है। जैसा कि रविंद्रनाथ टैगोर कहते हैं कि जितना हम जानते हैं उस सीमा के बीच में हम जो नहीं जानते उसे भी ग्रहण करने के लिए सक्षम होते हैं। हम धन्य हैं कि मनुष्य के रूप में हम में अद्भुत शक्ति है। आश्चर्य की बात है कि सूक्ष्म जगत के भीतर सार्वभौम है, संपूर्ण संसार–सीमित दायरे के अंदर असीम समाया होता है और भ्रम के अंदर सत्य।

संपादकीय

अपने–पराए की पहचान

अवध के ज्यादातर नवाबों के बारे में किस्सागो यही बताते हैं कि अपनी अजीबोगरीब सनकों के चक्कर में वे अक्सर 'पल में तोला, पल में माशा और पल में रत्ती' की गति को प्राप्त हुए रहते थे। तिस पर तुनुकमिजाजी कभी उनके कोप को कृपा में बदल देती थी और कभी कृपा को कोप में। कई बार तो उनका कोपभाजन बने शख्स को यह तक पता नहीं चल पाता था कि आखिर उससे गुस्ताखी क्या हुई?

तीसरे नवाब शुजाउद्दौला भी कुछ ऐसे ही थे। खासकर 22 अक्टूबर, 1764 को बक्सर की ऐतिहासिक लड़ाई में ईस्ट इंडिया कंपनी के हाथों मिली अपमानजनक शिकस्त ने उनका मनोविज्ञान बुरी तरह बिगाड़ दिया था। वे शक्की भी हो चले थे और कान के कच्चे भी। इससे वाकिफ दरबारी उन्हें अपनी 'सुनी–सुनाई' व 'हवा–हवाई' में फंसाते और मजे लेते थे। खुन्नसी वजीरों में रोज–रोज मची रहने वाली चिख–चिख ने उन्हें अपने–पराए की पहचान करने लायक भी नहीं ही छोड़ा था। कभी कोई वफादार उन्हें साजिशिया दिखने लगता और कभी किसी साजिशिए पर प्यार उमड़ आता। ऐयाशी का पुराना मर्ज था कि फिर भी बेकाबू हुआ रहता। जैसा कि बहुत स्वाभाविक था, इसके चलते उन्होंने एक के बाद एक कई वफादार खो दिए। बेहद सामान्य परिवार से आने वाले सीतापुर स्थित खैराबाद के बेनी भी इनमें से एक थे, जिनकी वफादारी से प्रसन्न होकर उन्होंने 1755 में अपना दीवान और 1759 में 'महाराजा' का खिताब देकर अपना नायब बनाया था। जरा–से शक की बिना पर उन्होंने बेनी को विश्वासघाती करार देकर पहले जेल में सड़ाया, फिर बेरहमी से उनकी आंखें फोड़वा दीं। इसका भी लिहाज नहीं किया कि 13 मई, 1764 को बक्सर कूच के वक्त यही बेनी उनके दाहिने हाथ थे।

इसके बावजूद अगर ट्रंप ने इस नतीजे को नई ताकत का स्रोत बना लिया तो इसका श्रेय काफी हद तक उनके राजनीतिक कौशल को जाता है।

मजबूत होकर उभरे हैं ट्रंप

अमन शर्मा।

महाभियोग के चक्रव्यूह से सुरक्षित निकल जाने के बाद अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप पहले के मुकाबले कमजोर नहीं, बल्कि कहीं ज्यादा मजबूत होकर उभरे हैं। अपने ऊपर लगे असंवैधानिक गतिविधियों के आरोप से बरी होने के तुरंत बाद जिस तरह से वे अपने विरोधियों पर टूट पड़े, अपने खिलाफ गवाही देने वाले दो प्रमुख व्यक्तियों– नैशनल सिक्युरिटी काउंसिल के सदस्य अलेक्जेंडर विंडमैन और यूरोपियन यूनियन में अमेरिका के राजदूत गॉर्डन सॉन्डलैंड को 48 घंटे के अंदर पद से हटा दिया, उससे भी अंदाजा मिलता है कि उन्हें अपनी इस बढ़ी हुई ताकत का भरपूर अहसास है। हालांकि महाभियोग प्रक्रिया के नतीजे की बात करें तो वह किसी भी रूप में अप्रत्याशित नहीं कहा जा सकता। पहले दिन से ही साफ था कि अमेरिकी संसद के निचले सदन में डेमोक्रैट्स के बहुमत के चलते वह प्रस्ताव पारित होगा, लेकिन ऊपरी सदन में रिपब्लिकन बहुमत उसे खारिज कर देगा।

वोटिंग भी एक अपवाद को छोड़कर पार्टी लाइन पर ही हुई। इसके बावजूद अगर ट्रंप ने इस नतीजे को नई ताकत का स्रोत बना लिया तो इसका श्रेय काफी हद तक उनके राजनीतिक कौशल को जाता है। हमले को ही बचाव बनाते

हुए उन्होंने एक तरफ 'दुश्मनों' का निर्ममता से सफाया करने की नीति अपनाई, दूसरी तरफ खुद को विक्टिम के तौर पर पेश करने में जुटे रहे।

इन दोनों का संयुक्त परिणाम यह हुआ है कि रिपब्लिकन पार्टी के अंदर से उनके नेतृत्व को चुनौती मिलने की संभावना ना के बराबर रह गई है। दूसरी तरफ विरोधी खेमे की कमजोरी जगजाहिर हो चुकी है। इसका एक मुलायम पहलू यह है कि ट्रंप जैसे राइटिस्ट नेता के बरक्स सीधी दावेदारी बर्नी सैंडर्स जैसे लेफ्टिस्ट की बन रही है जो रैडिकल लेफ्ट की नुमाइंदगी करते हैं। वे अपनी वैचारिक प्रतिबद्धता का लोहा भले मनवा लें, श्रमिक आबादी के एक हिस्से में अपनी मजबूत पैठ भी बना लें, पर मध्यवर्ग की आशंकाएं दूर करने की स्थिति में नहीं होते। मौजूदा लोकतांत्रिक ढांचे में मध्यम वर्ग की मजबूत भूमिका को देखते हुए ब्रिटेन के जेरेमी कॉर्बिन की तरह अमेरिका में बर्नी सैंडर्स की चुनावी संभावना भी धूमिल ही रहेगी।

ट्रंप की मजबूती के पीछे तेज होती इस चर्चा की भी बड़ी भूमिका है कि उनके मुकाबले डेमोक्रैटिक पार्टी के प्रत्याशी बर्नी सैंडर्स ही होंगे। इसके अलावा चीन का करॉना वायरस की चपेट में आना और जनवरी महीने में 2,25,000 नई नौकरियों के साथ अर्थव्यवस्था के मोर्चे पर मजबूती की खबरें आना भी ट्रंप के पक्ष में गया है। कुल मिलाकर, पद के दुरुपयोग और संवैधानिक मूल्यों से बेईमानी के आरोपों में घिरे राष्ट्रपति का निर्दोष सिद्ध हुए बगैर न केवल पद पर बने रहना बल्कि और मजबूत हो जाना अमेरिका के संवैधानिक और प्रशासनिक ढांचे को ही सवालों के घेरे में ला देता है। अमेरिका के साथ–साथ बाकी दुनिया के लिए भी यह कोई अच्छा संकेत नहीं है।

अष्टयोग- 4952

7	5		3	6		
	33		32		28	
2		7			6	1
	30	2	37	4	34	
5	1			7		4
	26		38		36	
	1	5	6			

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है.खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं.गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी.सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 4951 का हल

5	7	3	1	4	6	2
6	31	1	25	5	33	1
3	1	5	4	2	6	7
4	27	2	28	1	37	6
2	3	7	1	6	5	4
7	36	6	37	3	35	3
1	6	4	3	7	2	5

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

समय से इंसाफ

मोहन। एक मुजरिम के पास यह कानूनी विकल्प अभी भी बचा हुआ है। मौजूदा मामले में देरी इसी कारण हुई और फिर सरकार ने इसको लेकर सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया। होम मिनिस्ट्री ने अर्जी दाखिल कर गाइडलाइंस में बदलाव की गुहार लगाई है और कहा है कि क्यूरेटिव पिटिशन और मर्सी पिटिशन दाखिल करने की समय सीमा तय होनी चाहिए। सरकार का कहना है कि रेप, आतंकवाद और मर्डर जैसे कई अपराध देश में हुए हैं जिस कारण लोग सकते में हैं। समय की मांग है कि विक्टिम परिवार और देश के व्यापक हितों को ध्यान में रखकर गाइडलाइंस जारी हों। निर्भया केस में पहली बार सवाल उठा कि क्या मुजरिमों को एक साथ फांसी दिया जाना अनिवार्य है या फिर अलग–अलग फांसी हो सकती है? एक फरवरी को चारों को फांसी पर लटकाए जाने का आदेश दिया गया था। लेकिन मामला यहीं खत्म नहीं हुआ। इसी दौरान विनय की ओर से दया याचिका दायर कर दी गई, फिर अक्षय की ओर से भी दया याचिका दायर की गई।